राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

द्वारा विकसित

उच्च माध्यमिक (+2 स्तरीय) संशोधित पाठ्यक्रम

कक्षा-XI

वाणिज्य (Commerce)

सत्र- 2007-2009

(पूर्णतः सी०बी०एस०ई० के पाठ्यक्रम के समरूप)

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

(उच्च माध्यमिक प्रभाग)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

द्वारा विकसित

उच्च माध्यमिक (+2 स्तरीय) का संशोधित पाठ्यक्रम

पूर्णतः सी० बी० एस० ई० के पाठ्यक्रम के समरूप (भाषा के अतिरिक्त)

कक्षा-XI

वाणिज्य (Commerce)

सत्र- 2007-09

प्रकाशक

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति

(उच्च माध्यमिक प्रभाग, पटना)

Sole Printer and Sole Distributor

KANAK®

कनक प्रकाशन

प्रधान कार्यालयः- 'रघुवंशम्', पटना- 800 023

सेल्स कार्यालयः- शॉप नं० 15, ग्राउंड फ्लोर, जनपाड़ा हाउस, खजांची रोड, पटना-800 004 # Mob: 9304105921, 9304034728.

- पाठ्यक्रम विकास :

  राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस० सी० ई० आर० टी०), बिहार

  महेन्द्रू, पटना-800 006

- © प्रकाशक :

  बिहार विद्यालय परीक्षा समिति

  (उच्च माध्यमिक प्रभाग)

  बुद्ध मार्ग, पटना-1

- कम्पोजिंग, इनर डिजाइनिंग एवं कवर डिजाइनिंग :

  कनक प्रकाशन

  प्रधान कार्यालय- 'रघुवंशम्', पटना- 800 023

  सेल्स कार्यालय- शॉप नं० 15, ग्राउंड फ्लोर,

  जनपाड़ा हाउस, खजांची रोड, पटना-800 004

- प्रथम संशोधित संस्करण : सितम्बर, 2007

- मुद्रित प्रतियाँ : 5,000 (पांच हजार प्रतियाँ)

- मूल्य : पन्द्रह रूपये मात्र /-

- मुद्रण सौजन्य : कनक प्रकाशन (प्रेस- बिहार ऑफसेट, बिड़ला मंदिर रोड, पटना।)

पाठ्यक्रम का कोई भी अंश **बिहार विद्यालय परीक्षा समिति** की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित या प्रकाशित करना दण्डनीय अपराध होगा।

बिहार का +2 स्तरीय (कक्षा-XI) का संशोधित पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2006 के आलोक में बिहार का यह नवीन संशोधित पाठ्यक्रम (2007) भी 'शिक्षा' के बारे में एक विशिष्ट दृष्टिकोण पर आधारित है। इसके अनुसार, 'शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का, जिन्दा होने का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें और साथ ही इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।''

बिहार के इंटर के वर्त्तमान पाठ्यक्रम एवं सी०बी०एस०ई० के वर्त्तमान पाठ्यक्रम के आधार पर निम्नांकित विषयों की पढ़ाई +2 स्तरीय शैक्षिक संस्थानों में करने का निर्णय मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार द्वारा लिया गया है–

i. भाषा समूह–

1. हिन्दी	2. उर्दू	3. अंग्रेजी
4. संस्कृत	5. बांग्ला	6. मैथिली
7. मगही	8. अरबी	9. फारसी
10. भोजपुरी	11. पालि	12. प्राकृत

उक्त भाषाओं में से प्रत्येक विद्यार्थी को 11वीं एवं 12वीं कक्षा में **अनिवार्यतः दो भाषाएँ** पढ़नी होंगी। यदि कोई विद्यार्थी चाहे तो उक्त भाषा समूह में से कोई तीसरी भाषा भी ले सकता है। लेकिन यह तीसरी भाषा उसके ऐच्छिक विषय की सूची में रहेगी। भाषा समूह के उक्त विषयों के पाठ्यक्रम सभी पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए एक जैसे होंगे। ज्ञातव्य है कि पूर्व में राज्य में विज्ञान, कला एवं वाणिज्य के लिए अलग-अलग पढ़ाई होती थी, अतः भाषाओं के पाठ्यक्रम भी अलग-अलग होते थे। इस व्यवस्था को नये सत्र (जुलाई 2007) से समाप्त किया जा रहा है।

ii. वैकल्पिक विषय समूह–

1. गणित	2. भौतिक विज्ञान	3. रसायन शास्त्र
4. जीव विज्ञान	5. कम्प्यूटर सायंस	6. इतिहास
7. राजनीति शास्त्र	8. भूगोल	9. अर्थशास्त्र
10. समाजशास्त्र	11. मनोविज्ञान	12. दर्शनशास्त्र
13. गृह विज्ञान	14. संगीत	15. बिजनेस स्टडीज
16. एकाउन्टेंसी	17. इंटरप्रेनरशिप	18. मल्टीमीडिया एवं वेब टेक्नोलॉजी
19. योग एवं शारीरिक शिक्षा		

उक्त विषयों में से शिक्षार्थी को अनिवार्यतः **तीन विषयों** का अध्ययन करना होगा।

इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी चाहें तो उक्त दोनों विषय (भाषा एवं वैकल्पिक) समूह में से **किसी एक विषय को ऐच्छिक विषय** के रूप में पढ़ सकते हैं। अच्छा होगा कि ऐच्छिक विषय के रूप में शिक्षार्थी किसी एक कार्य आधारित व व्यावसायिक विषय का अध्ययन करें।

पाठ्यपुस्तकें : नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर राज्य में पहली बार 11वीं एवं 12वीं कक्षा के लिए विषयवार पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण किया गया है। ये पाठ्यपुस्तकें बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा मुद्रित कर उपलब्ध कराई जा रही हैं। भाषाओं के अतिरिक्त सभी वैकल्पिक विषयों की पाठ्यपुस्तकें वही होंगी जिनका प्रकाशन एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली एवं बी.टी.बी.सी., बिहार द्वारा 11-12वीं कक्षा के लिए किया गया है।

12वीं की बोर्ड परीक्षा : वर्ष 2009 में होनेवाली 12वीं की बोर्ड परीक्षा से संबद्ध सूचनाएँ एवं मूल्यांकन पद्धति के संबंध में बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना सूचनायें प्रेषित करेगा।

– राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, पटना।

अनुक्रमणिका

विवरण		पृष्ठ संख्या
समूह-i	**अनिवार्य पत्र (भाषा)**	
	1. हिन्दी (Hindi)	05 - 06
	2. अंग्रेजी (English)	07 - 09
समूह-ii	**वैकल्पिक पत्र (वाणिज्य संकाय में)**	
	1. बिजनेस स्टडीज (Business Studies)	10 - 16
	2. एकाउन्टेन्सी (Accountancy)	17 - 22
	3. उद्यमिता (Entrepreneurship)	23 - 24
	4. अर्थशास्त्र (Economics)	25 - 31

नोट– अन्य भाषाओं हेतु 'भाषा' की 'पाठ्यक्रम पुस्तिका' देखें।

भाषा (हिन्दी)

Class-XI

प्रस्तावना–

भाषा के बिना यह जीवन-जगत् एक अर्थ में अंधकारमय है। इसे हम देखकर भी जान-समझ नहीं पाते, अनुभव नहीं कर पाते। भाषा एक महती शक्ति और प्रकाश है। वह साधन और माध्यम है जिसके द्वारा हम जीवन-जगत् को जान-समझ पाते हैं, अनुभव कर पाते हैं; तथा प्राप्त अनुभव और ज्ञान को व्यक्त कर पाते हैं। भाषा के द्वारा ही हम विचार करते हैं और अपने विचारों और अनुभवों को प्रकट कर पाते हैं। इसके सहारे ही हम अपने अनुभव, विचार, संवेदन, इच्छाएँ और मनोभाव दूसरों तक सम्प्रेषित कर पाते हैं। यह सम्प्रेषण का एकमात्र विश्वसनीय आधारभूत माध्यम है। भाषा-क्षमता अर्जित करते हुए ही हम मानसिक-बौद्धिक विकास को प्राप्त करते हैं जो अन्य प्रकार की प्रगति और विकास का मूल है। इस रूप में भाषा की शिक्षा अन्य तमाम विषयों की शिक्षा का आधार और सहयोगी है। स्वभावतः शिक्षण की लम्बी प्रक्रिया में भाषा-शिक्षण और भाषा-परिष्कार का कार्य निरंतरता की अपेक्षा रखता है।

भारतीय संविधान द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिन्दी व्यापक जन की भाषा है। एक हजार वर्षों से भी अधिक समय से विकसित होती आयी हिन्दी भाषा और उसका वैविध्यपूर्ण व्यापक एवं विस्तृत साहित्य विविध भाषा-भाषियों, अनेक जातियों, धर्मों-सम्प्रदायों, लोक संस्कृतियों और विचारधाराओं द्वारा सेवित-संवर्धित होता आया है। इसमें हजार वर्षों से व्यापक भारतीय जनता की आशा-आकांक्षा, हर्ष-विषाद, संकल्प-विकल्प और स्वप्न-यथार्थ की अबाध अभिव्यक्ति होती आयी है। हिन्दी भाषा-साहित्य के सुदीर्घ इतिहास में अनेकानेक प्रवृत्तियाँ और परम्पराएँ बनीं और विलीन हुईं। वे कभी दिखीं तो कभी अंतर्धान होकर आगे पुनः परिवर्तित रूपों में प्रकट हुईं। हिन्दी भाषा और साहित्य को पुराने युगों में कभी राजसत्ता और धर्म जैसी प्रभावशाली शक्ति का संरक्षण मिला हो अथवा नहीं; लोक संरक्षण इसे सदैव प्राप्त रहा। इसी लोकसंरक्षण के बल पर वह अपनी शक्ति, प्रभाव, क्षमता और विस्तार को आगे बढ़ाते हुए स्वाधीनता संघर्ष का, अहिन्दी भाषियों द्वारा भी सहर्ष स्वीकृत, प्रमुख माध्यम बनी। इसकी क्षमताओं और लोकप्रियता को ही दृष्टिपथ में रखकर संविधान निर्माताओं ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठित किया। आज यह भाषा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक परिदृश्य में भारत राष्ट्र के महान् गौरव के अनुरूप अपनी पहचान और प्रतिष्ठा अर्जित कर रही है। यह सरकारी-गैरसरकारी गतिविधियों, सरोकारों और व्यवहारों में बहुविध रूपों और छवियों में अपनाई जाकर अपनी प्रगति और विकास के नये आयामों को तय करती दिखाई पड़ रही है। यह आधुनिक जीवन और वैश्विक व्यवहारों-सरोकारों में उद्योग-धंधे, व्यापार-वाणिज्य, राजनीति-अर्थनीति, युद्ध और शांति, ज्ञान-विज्ञान-प्रौद्योगिकी, दण्ड-न्याय, शिक्षा-संस्कृति-कला-शिल्प-साहित्य-धर्म आदि तमाम धरातलों पर कुशलतापूर्वक वर्धमान और विकसनशील है। इन व्यापक व्यवहारों और बहुव्यापित्यों के अनुरूप हिन्दी भाषा में आज नई-नई प्रयुक्तियाँ प्रकट हो रही हैं, नये-नये पारिभाषिक शब्द निर्मित हो रहे हैं और तद्नुरूप व्याकरण में भी नये परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं।

हिन्दी का पाठ्यक्रम

पत्र : एक **समय : 3 घंटे** **कुल अंक : 100**

इस वर्ग में **'दिगंत भाग-1'** नाम की एक पुस्तक होगी जिसमें **12 गद्य पाठ, 12 पद्य पाठ एवं 3 पाठ द्रुतवाचन** के लिए होंगे। गद्य पाठों के चयन में हिन्दी के गद्य-रूपों की विविधता, विकास-क्रम का तो ध्यान रखना होगा ही, साथ ही हिन्दी से इतर दूसरी भाषाओं की भी श्रेष्ठ रचनाओं से छात्रों का परिचय जरूरी होगा। पाठों के चयन में इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि छात्र अपनी साहित्यिक विरासत से परिचय प्राप्त करें और साथ ही आधुनिक दृष्टिकोण का भी विकास कर सकें। **पद्य खंड में हिन्दी के 12 कवियों की रचनाएँ हिन्दी कविता** के विकास-क्रम को ध्यान में रखकर दी जा सकेंगी। यह विकास-क्रम प्राचीनता और आधुनिकता का संतुलित बोध करा सकेगा। इन दो खंडों के अतिरिक्त इस पुस्तक में एक तीसरा खंड द्रुतवाचन का होगा जिसमें **एशिया की चुनिंदा तीन कहानियाँ** शामिल की जाएँगी। इस खंड को छात्र बिना **अतिरिक्त बोझ के पढ़ सकेंगे।**

गद्य खंड :

1. प्रेमचंद	-	पूस की रात (कहानी)
2. रामचंद्र शुक्ल	-	कविता की परख (वैचारिक निबंध)
3. कुमार गंधर्व	-	भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर (व्यक्तिपरक निबंध)
4. विष्णुभट गोडसे वरसईकर	-	आँखों देखा गदर (संस्मरण)
5. सत्यजित राय	-	चलचित्र (फिल्म पर निबंध)
6. भोला पासवान शास्त्री	-	मेरी वियतनाम यात्रा (यात्रा-वृत्तांत)
7. कृष्णा सोबती	-	सिक्का बदल गया (कहानी)
8. फणीश्वरनाथ रेणु	-	उतरी स्वप्न परी : हरी क्रांति (रिपोर्ताज)
9. हरिशंकर परसाई	-	एक दीक्षांत भाषण (व्यंग्य)
10. ओदोलेन स्मेकल	-	सूर्य (सांस्कृतिक निबंध)

11. मेहरून्निसा परवेज - भोगे हुए दिन (कहानी)
12. कृष्ण कुमार - गांव के बच्चों की शिक्षा

पद्य खंड :

1. विद्यापति - चानन भेल विषम सर रे, सरस बसंत समय भल पाओल
2. कबीर - संतो देखत जग बौराना, हो बलैया कब देखौंगी तोहि
3. मीराबाई - जो तुम तोड़ो पिया, मैं गिरधर के घर जाऊँ
4. सहजोबाई - मुकुट लटक अटकी मन माहीं, राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ
5. भारतेन्दु हरिश्चंद्र - भारत-दुर्दशा
6. मैथिलीशरण गुप्त - झंकार
7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' - तोड़ती पत्थर
8. नागार्जुन - बहुत दिनों के बाद
9. त्रिलोचन - गालिब (सॉनेट)
10. केदारनाथ सिंह - जगरनाथ
11. नरेश सक्सेना - पृथ्वी
12. अरुण कमल - मातृभूमि

द्रुतवाचन खंड : एशियाई देशों की तीन कहानियाँ।

इस वर्ग में **'व्याकरण, रचना और साहित्य-रूप'** की एक स्वतंत्र पुस्तक होगी जो वर्ग- **XI** और **XII** दोनों के लिए होगी। इस पुस्तक में के व्याकरण एवं रचना खंड में संज्ञा, सर्वनाम, कारक, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, अव्यय, काल, क्रिया, निपात आदि व्याकरणिक प्रकरणों के अब तक सीखे जाने हुए तथ्यों के सुव्यवस्थित पाठ एवं अभ्यास वर्ग-**XI** के लिए होंगे।

साहित्य-रूप वाले खंड में साहित्यशास्त्र, काव्य-रूप और साहित्यिक विधाओं के संबंध में आधारभूत और प्रामाणिक जानकारी होगी जो आकार में लघु होने के बावजूद शब्द-शक्ति, रस, ध्वनि, छंद, लय, अलंकार के अतिरिक्त महाकाव्य, खंडकाव्य, चम्पूकाव्य, मुक्तक, प्रगीत तथा गद्य की विविध विधाओं एवं रचना-रूपों, जैसे- निबंध एवं उसके प्रभेदों के साथ-साथ उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, शब्दचित्र, जीवनी, संस्मरण तथा नाटक एवं एकांकी विषयक तात्विक बोध छात्रों को कराने में समर्थ होगी।

पूरक पाठ्य पुस्तक : पूरक पाठ्य-पुस्तक के रूप में **'हिन्दी भाषा और साहित्य की कथा'** नाम की एक पुस्तक होगी। यह पुस्तक कक्षा- **XI** एवं कक्षा- **XII** दोनों के लिए होगी। इस पुस्तक में हिन्दी भाषा और साहित्य का संक्षिप्त इतिहास होगा। इस इतिहास में हिन्दी साहित्य के विभिन्न युगों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि, प्रमुख रचनाओं एवं रचनाकारों के ब्यौरे होंगे। इसका विशेष रूप से ध्यान रखना होगा कि ऐतिहासिक विकास की निरंतरता का समुचित बोध हो सके। कक्षा- **XI** के छात्र इस पुस्तक के उन्हीं हिस्सों को पढ़ेंगे जिनमें आदिकाल से लेकर 19वीं शती तक का साहित्यिक इतिहास होगा।

नोट– अंक-वितरण की जानकारी हेतु भाषा की प्रकाशित पाठ्यक्रम की पुस्तिका देखें।

हिन्दी (अनुमोदित पुस्तकों के नाम)

(i) दिगंत (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

(ii) हिन्दी भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

(iii) हिन्दी व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

ENGLISH LANGUAGE

Class-XI

I. INTRODUCTION :

Language, the chief function of which is communication, is the most distinctive trait of human society. The very acquisition of knowledge depends on language. Language is a marker of our identity and is closely associated with power in society. We can hardly do without language in any walk of life.

The knowledge of English is especially very important in the age of globalization we are living in. The richness of this language and the existing stock of wide knowledge in English make it immensely useful. It is a window on the world and an access to the growing store of knowledge in science, technology and humanities.

We have to acknowledge, whether we like it or not, that English plays an important role in the domains of education, administration, business and political relations, judiciary, industry etc and is, therefore, a passport to social mobility, higher education and better job opportunities.

The mushroom growth of so called 'English medium' or public shools in every nook and corner of the state and the people's preference to such schools is a testimony to the growing importance and need of English which has to be addressed in the curriculum / syllabus of the state. The very principle of equality entails that English should not remain associated only with the rich, elite or the upper middle class. Even a rural child of the underprivileged has an equal right to gain a sufficiently good level of proficiency in it so that he should not suffer discrimination for lack of it.

With the changes in the aims and objectives of education, redesigning curricular framework and thereof revision of syllabus becomes a compulsion. This compulsion is the positive strength of a live education system. Unfortunately, this has not been the case with these education system in Bihar. The last revision took place about 13 years ago and hardly any significant attempt was made in the these years to update the syllabus according to the needs and requirements of the learners or the society.

Even the last revision that took place 13 years ago lacked in a very essential element, i.e., socio-economic, cultural, political context or what can be termed as 'Bihari input'. It was exclusively based on the recommendations of the NEP 1986.

The neglect of 'Bihari input' in the syllabus has very unhappy consequences. The learners failed to find any substantial link between the life around them and what was being taught in the classroom. Rote learning thus got hold over understanding.

The guidelines of NCF 2005 framed in the light of the well known report "Learning without Burden" has shifted the focus from the teachers to the learners, confining the former to the role of facilitator only. The NCF 2005 recognises leaerners as the constructor of knowledge and sees multilingualism as a strength in the classroom. It prescribes five guiding principles. These include / imply :

- Connecting knowledge to life outside the school.
- Ensuring that learning be shifted away from rote methods.
- Enriching the curriculum to provide for over all development of the child rather than remain textbook centric, and
- Making examinations more flexible and integrated with classroom life.
- Nurturing identify of the learners within democratic policy.

The change in attitude to teaching and learning necessitates the revision of the State Curriculum Framework and thereof the syllabus of English language. It is high time we recognised the importance of creating socio-cultural contexts that would encourage children to participate actively in understanding and create appropriate communicative practices. The Bihari inputs and the appropriate use of mother-tongue in the classroom will accelerate the pace of learning and thus can help the learners overcome their fer of English. It's time we removed the notion that English is difficult to learn.

The present syllabus owes much to the NCF 2005 and the NCERT syllabus developed in the light of NCF 2005. The attempt has been to accommodate the NCERT syllabus as far as practicable in the context of Bihar. This has entailed, to some extent, the omission, modification and even shifting of many of the learning objectives, learning strategies and learning outcomes to another class.

It is important to state that, unlike the NCERT syllabus which is only stage wise, the proposed state syllabus is developed both stage-wise and class-wise.

One Paper | Three Hours | Marks : 100

Syllabus : Class-XI

Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Resources / Textual support
1.	Live / Recorded presentation on variety of topics.	Oral-written exercises	Develop Listening, Speaking and comprehension skills.	Audio records should be accompanied with the text prints to enable the teachers to read out of there is no audio aids.
2.	Group discussions on familiar topics / contemporary issues	Oral exercises	Developing Argumentative and Speaking skills.	Examples : Familiar topic : "Can literature help us win bread and butter ?" Contemporary issue : "Is death sentence viol-ation of human rights ?"
3.	Preparing notes and writing summary of a given passage	Writing exercises	Identifying cen-tral / main point and supporting details etc. and perceiving ove-rall meaning and organisation.	The texts should deal with socio-political and cultural issues along with the principles enshrined in the constitution.
4.	Comprehension of unseen factual / imaginative pass-ages (Short and long question-answer items)	Reading with under-standing and Writing exercises	Developing the skills of reaso-ning, drawing inferences.	...
5.	Reading of tales / short stories / short plays	Reading and Writing exerc-ises	Reading with understanding and imbibing virtues.	Bihari writers, Indian writers, Commonwealth writers and native writers of English
6.	Reading of informative pieces / essays	Reading with under-standing and Writing exercises	Read with understanding and respond effectively in writing.	On Environment, Economics, Sports, Science, Health and Hygiene, Adolescence, Human values and Human rights, Cultural diversity and unity etc.
7.	Reading poems for enjoyment and understanding	Oral and Written exercises	Enjoying and understanding poems and imbibing human values and / or encountering truth.	World fame poets (both native and non native poets of English), Indian poets, Bihari Poets.
8.	Free Composition on familiar / contemporary issues	Writing exercises	Communicative skills in writing	Notices, memorandum, formal and informal letters, applica-tion etc.
9.	Various registers of English	Oral / written exercises	Build communicative competences in various registers of English.	Support with standard pieces of writing.
10.	Translation from mother tongue into English	Writing exercises	Ability to translate from mother tongue into English and vice versa.	Wide ranging topics covering different aspects of life including great person-alities.
11.	Grammatical items and structures : (a) The use of different Tense forms	Oral and Writing exercises	Listening, Speaking, Reading and Writing skills.	Sufficient examples followed by extensive exercises based on or related to text.

Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Resources / Textual support
	for different kinds of narration (e.g. media commen-taries. reports. progra-mmes. etc.) (b) Reported speech in extended texts. (c) The use of Passive forms in scientific and innovative writing. (d) Converting one kind of sentence / clause into a different kind of structures as well as other items to exemplify stylistic variations in different discourses. (e) Modal auxiliaries – Uses based on semantic consi-derations. (f) Phrases & Idioms (g) Analysis.			

Note : For marking distribution, please see the Language's Syllabi

BOOKS RECOMMENDED :

1. **The Rainbow (Part - I) :** Developed by SCERT, Bihar & Printed by B.T.B.C., Bihar)
2. **The Story of English :** Developed by SCERT, Bihar & Printed by B.T.B.C., Bihar)
3. **English Grammar :** Developed by SCERT, Bihar & Printed by B.T.B.C., Bihar)

BUSINESS STUDIES

Class-XI

Rationale

The course in Business Studies and Accountancy are introduced at +2 stage of Higher Secondary Education as formal commerce education is provided after first ten years of schooling. Therefore, it becomes necessary that instructions in these subjects are given in such a manner that students have a good understanding of the principles and practices bearing in business (trade and industry) as well as their relationship with the society.

Business is a dynamic process that brings together technology, natural resources and human initiative in a constantly changing global environment. To understand the framework in which a business operates, a detailed study of the organisation and management of business processes and its interaction with the environment is required. Globalisation has changed the way firms transact their business. Information Technology is becoming a part of business operations in more and more organisations. Computerised systems are fast replacing other systems. E-business and other related concepts are picking up fast which need to be emphasized in the curriculum.

The course in Business Studies will prepare students to analyse, manage, evaluate with the business environment. It recognizes the fact that business influences and is influenced by social, political, legal and economic forces. It allows students to appreciate that business is an integral component of society and develops an understanding of many social and ethical issues.

Therefore, to acquire basic knowledge of the business world, a course in Business Studies would be useful. It also informs students of a range of study and work options and bridges the gap between school and work.

Objectives

- To develop in students an understanding of the processes of business and its environment.
- To acquaint students with the dynamic nature and inter-dependent aspects of business;
- To develop and interest in the theory and practice of business trade and industry;
- To familarise candidates with the theoretical foundations of organising managing and handling operations of a business firm;
- To help students appreciate the economic and social significance of business activity and the social costs and benefits arising therefrom;
- To acquaint students with the practice of managing the operations and resources of business;
- To prepare students to function more effectively and responsibly as consumers, employers, employees and citizens;
- To help students in making the transaction from school to the world of work including self-employment;
- To develop in students a business attitude and skills to be precise and articulate.

Course Structure

The Business Studies syllabus has been divided into **4 Semester Course** at the higher secondary stage. Each semester would be for about six months duration.

CLASS-XI

Semester - I : Foundations of Business

Semester - II : Corporate Organisation, Finance and Trade

COURSE STRUCTURE

Class-XI

One Paper | **Three Hours** | **Marks : 100**

Units		Periods	Marks
A. Foundations of Business			
Unit-I	Nature and Purpose of Business	20	08
Unit-II	Forms of Business Organisations	24	12
Unit-III	Private, Public and Global Enterprises	20	10
Unit-IV	Business Services	18	08
Unit-V	Emerging Modes of Business	10	06
Unit-VI	Social Responsibility of Business and Business Ethics	12	06
	Total	**104**	**50**
B. Corporate Organisation, Finance and Trade			
Unit-VII	Formation of a Company	16	07
Unit-VIII	Sources of business finance	20	10
Unit-IX	Small Business	14	07
Unit-X	Internal Trade	20	10
Unit-XI	International Business	12	06
Unit-XII	Project Work	22	10
	Total	**104**	**50**

बिजनेस स्टडीज

SEMESTER-I

Foundation of Business ***(Total Periods : 104)***

Unit - I : Nature and Purpose of Business **(Periods : 20)**

- Concept and characteristics of business
- Business, profession and employment – distinctive features.
- Objectives of business – economic and social, role of profit in business.
- Classification of business activities : Industry and Commerce.
- Industry – types : primary, secondary, tertiary.
- Commerce : Trade and Auxilaries.
- Business risks – nature and causes.

Unit - II : Forms of Business Organisation **(Periods : 24)**

- Sole Proprietorship; Joint Hindu Family Business – meaning, features, merits and limitations.
- Partnership – meaning, types, registration, merits, limitations, types of partners.
- Co-operatives Societies – types, merits and limitations.
- Company : Private Ltd., Public Ltd. – merits, limitations.
- Choice of form of business organisations.
- Starting a business – Basic factors.

Unit - III : Private, Public and Global Enterprises **(Periods : 20)**

- Private Sector and Public Sector
- Forms of Organising public sector enterprises :
  (a) Departmental Undertaking
  (b) Statutory Corporation
  (c) Government Company
- Changing role of public sector
- Global Enterprises (Multinational Companies) : meaning and features.
- Joint ventures – meaning, benefits.

Unit - IV : Business Services (Periods : 18)

- Nature and types of Business services – Banking, Insurance, Transporation, Warehousing, Communication.
- Banking – types of Banks, Functions of Commercial banks, E-banking
- Insurance : principles, types : life, fire and marine.
- Postal and Telecom services.
- Warehousing : types and functions.

Unit - V : Emerging Modes of Business (Periods : 10)

- E-business – Meaning, scope and benefits, Resources required for successful e-business implementation, On-line transactions, payment mechanism, security and safety and business transactions.
- Outsourcing – concept, need and scope.

Unit - VI : Social Responsibility for Business and Business Ethics (Periods : 12)

- Concept of social responsibility;
- Case for social responsibility;
- Responsibility towards different interest groups : owners, investors, employees, consumers, government, community and public in general.
- Business and environmental protection;
- Business ethics : concept and elements.

SEMESTER-II

Corporate Organisation, Finance and Trade

(Total Periods : 104)

Unit - VII : Formation of a Company (Periods : 16)

Stages in the formation of a Company :

- Promotion,
- Incorporation, and
- Commencement of business.

Unit - VIII : Sources of Business Finance (Periods : 20)

- Nature and significance
- Financial requirements and sources : owners funds and borrowed funds
- Methods of raising Finance :
  - (a) Equity and Preference shares
  - (b) Debentures and Bonds
  - (c) Retained profits
  - (d) Public deposits
  - (e) Loan from Commercial Banks, Loan from financial institutions.
  - (f) Trade Credit
  - (g) Discounting of Bills of Exchange
  - (h) Global Depository Receipt, American Depository Receipt

Unit - IX : Small Business (Periods : 14)

- Small Scale Industry; Tiny Sector, cottage and rural industry;
- Role of small business in rural India;
- Problems of small business in India
- Government Assistance and Special Schemes for Industries in rural, backward and hilly areas.

Unit - X : Internal Trade (Periods : 20)

- Meaning and types of internal trade : wholesale and retail;
- Services of a wholesaler and a retailer.
- Types of Retail Trade :
  - (a) Itinerant retailers and fixed shops.
  - (b) Departmental store, super market, malls, chain store, mail order business, consumer's co-operative store.
  - (c) Automatic Vending Machine
- Role of Chambers of Commerce and Industry in promotion of internal trade.

Unit - XI : International Business **(Periods : 12)**

- Nature, Importance, scope and complexities involved in International Business;
- Basic information about ways of entering into International Business;
- Contract manufacturing : licensing; franchising; Joint ventures and Setting up Wholly Owned Subsidies;
- Export-Import procedures and Documentation;
- Foreign Trade Promotion : Organisational Support and Incentives; Nature and Importance of Export Processing Zone / Special Economic Zones;
- International Trade Institutions and Agreement : WTO, UNCTAD, World Bank / IMF.

Unit - XII : Project Work

(Suggestive / Illustrative Projects) **(Periods : 22)**

- Find out from local sample business unit(s) the various objectives they pursue.
- Problems of setting up and running business units.
- Enquiry into the ethics of running business through questionnaires.
- Survey of quality of bank services in the local branch office.
- Study of postal and courier mail services.
- Availability and use of agency services, advertising, packaging, investments in savings schemes etc.
- Study the profile of a sole trader / partnership commenting on the nature and working of business.
- Study of a Joint Hindu family business.
- Study of the working of any co-operative society.
- Study of a small business unit regarding source of finance.
- Nature of different traders (like hawkers and pedlars in a specific locality) in issue of goods, capital investment, turnover.
- Study of weekly bazaar in a locality.
- Study of franchise retail store.
- Study of export / import of any article.
- Problems of women entrepreneurs in business.
- Waste / garbage disposal.
- Study of a pavements trade.
- Prepare a scrapbook and collect articles on the changing role of public sector and any other topics related to the syllabus.

Marks may be suitably distributed over the different parts of the Project Report -
1. Objectives 2. Methodology 3. Conclusions - findings and suggestions.

*

BOOKS RECOMMENDED :

1. **Business Studies (Class-XI)** : Developed by NCERT, New Delhi & Printed by B.T.B.C., Bihar)

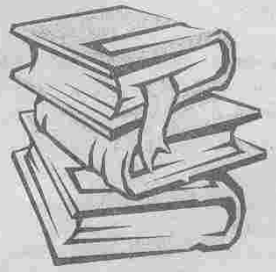

Class-XI

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक | समय : 3 घंटे | कुल अंक : 100

इकाई		पीरियड	अंक
A. व्यवसाय के आधार			
इकाई-I	व्यवसाय की प्रकृति एवं उद्देश्य	20	08
इकाई-II	व्यवसायिक संगठन के स्वरूप	24	12
इकाई-III	निजी, सार्वजनिक एवं सार्वभौमिक उपक्रम	20	10
इकाई-IV	व्यवसायिक सेवायें	18	08
इकाई-V	व्यवसाय के नवोदित माध्यम	10	06
इकाई-VI	व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यवसायिक नैतिकता	12	06
	कुल	**104**	**50**
B. व्यवसायिक संगठन, वित्त एवं व्यापार			
इकाई-VII	कम्पनी की स्थापना	16	07
इकाई-VIII	व्यवसायिक वित्त के स्रोत	20	10
इकाई-IX	लघु व्यवसाय	14	07
इकाई-X	आंतरिक व्यापार	20	10
इकाई-XI	अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय	12	06
इकाई-XII	प्रोजेक्ट कार्य	22	10
	कुल	**104**	**50**

भाग 'अ' : व्यवसाय के आधार

कुल पीरियड- 104

इकाई-I. व्यवसाय की प्रकृति एवं उद्देश्य– (पीरियड- 20)

- **व्यवसाय–** विचार/अर्थ, विशेषताएँ
- व्यवसाय, पेशा एवं रोजगार में तुलना
- **व्यवसाय के उद्देश्य–** आर्थिक व सामाजिक उद्देश्य, व्यवसाय में लाभ का महत्व।
- **व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण–** उद्योग एवं वाणिज्य।
- **उद्योग–** प्रकार : प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक।
- वाणिज्य : व्यापार एवं व्यापार की सहायक क्रियाएँ।
- **व्यावसायिक जोखिम–** प्रकृति एवं कारण।

इकाई-II. व्यावसायिक संगठन के स्वरूप– (पीरियड- 24)

- एकल स्वामित्व; संयुक्त हिन्दु पारिवारिक व्यवसाय- अर्थ, विशेषताएँ, गुण एवं सीमाएँ।
- **साझेदारी-** अर्थ, प्रकार, पंजीयन, गुण, सीमाएँ साझेदारों के प्रकार।
- **सहकारी समितियाँ–** प्रकार, गुण एवं सीमाएँ।
- **कम्पनी–** निजी एवं सार्वजनिक कम्पनी गुण एवं सीमाएँ।
- व्यावसायिक संगठन के स्वरूप का चयन।
- **व्यवसाय का प्रारंभ–** आधारभूत कारक।

इकाई-III. निजी, सार्वजनिक एवं सार्वभौमिक उपक्रम– (पीरियड- 20)

- निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र।

- सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के स्वरूप का संगठन।
- विभागीय संगठन।
- वैधानिक निगम।
- सरकारी कम्पनियाँ।
- सार्वजनिक क्षेत्र का बदलता स्वरूप।
- **सार्वभौमिक उपक्रम (बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ)**– अर्थ, विशेषताएँ।
- **संयुक्त उपक्रम**– अर्थ एवं लाभ।

इकाई-IV. व्यावसायिक सेवाएँ– (पीरियड- 18)

- **व्यावसायिक सेवाओं की प्रकृति एवं प्रकार**– बैंकिंग, बीमा, परिवहन, संग्रहण, संचार।
- **बैंकिंग**– प्रकार, व्यावसायिक बैंकों के कार्य, इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग।
- **बीमा**– सिद्धांत एवं प्रकार : जीवन, अग्नि एवं समुद्री बीमा।
- डाक एवं संचार सेवाएँ।
- **संग्रहण**– प्रकार एवं कार्य।

इकाई-V. व्यवसाय के नवोदित माध्यम– (पीरियड- 10)

- **ई-व्यवसाय**– अर्थ, क्षेत्र व लाभ, सफल ई-व्यवसाय के लिए आवश्यक संसाधन, ऑन लाईन लेन-देन, भुगतान प्रक्रिया, व्यावसायिक सौदों की सुरक्षा एवं प्रबंध।
- **बाह्य साधन सेवाएँ**– प्रकृति, आवश्यकता एवं क्षेत्र।

इकाई-VI. व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता– (पीरियड- 12)

- सामाजिक उत्तरदायित्व की विचारधारा।
- सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रकरण।
- स्वामियों एवं विनियोगकर्त्ताओं, मजदूरों एवं कर्मचारियों, उपभोक्ताओं, सरकार तथा समुदाय एवं जनसाधारण के प्रति उत्तरदायित्व।
- व्यवसाय एवं पर्यावरण सुरक्षा।
- **व्यावसायिक नैतिकता**– प्रकृति व तत्व।

भाग 'ब' : व्यवसायिक संगठन, वित्त एवं व्यापार

इकाई-VII. कम्पनी की स्थापना– (पीरियड- 16)

- **कम्पनी की स्थापना के विभिन्न चरण**– प्रवर्तन, समामेलन एवं व्यवसाय का प्रारंभ।

इकाई-VIII. व्यावसायिक वित्त के स्रोत– (पीरियड- 20)

- प्रकृति एवं महत्व।
- स्वामी का कोष एवं ऋण कोष।
- **वित्त प्राप्ति के स्रोत/साधन**– समता एवं पूर्वाधिकार अंश, सार्वभौमिक जमाकर्त्ता प्राप्ति (GDR), अमेरिकन जमाकर्ता रसीद (ADR), ऋण-पत्र एवं बॉंड, रोका हुआ (अविभाजित) लाभ, सार्वजनिक जमा, वित्तीय संस्थाओं से ऋण, व्यावसायिक बैंकों से ऋण, ट्रेड क्रेडिट अथवा व्यापारिक जमा।

इकाई-IX. लघु व्यवसाय– (पीरियड- 14)

- **लघु आकार उद्योग**– छोटे पैमाने के, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग।
- ग्रामीण भारत में लघु व्यवसाय की भूमिका।
- भारत में लघु व्यवसाय की समस्या।
- ग्रामीण, पिछड़े एवं पहाड़ी क्षेत्रों में उद्योगों के लिए सरकारी वित्तीय सहायता एवं विशेष योजना।

इकाई-X. आंतरिक व्यापार– (पीरियड- 20)

- **आंतरिक व्यापार के अर्थ एवं प्रकार**– थोक एवं फुटकर व्यापार।
- थोक विक्रेता एवं फुटकर विक्रेता की सेवाएँ।
- **फुटकर व्यापार के प्रकार**– बिना दुकान वाले फुटकर व्यापारी, स्थायी दुकानें, विभागीय भंडार, सुपर बाजार, मॉल्स, श्रृंखलाबद्ध दुकानें, डाक द्वारा व्यापार, उपभोक्ता सहकारी भंडार, स्वचालित विक्रय मशीन।
- आंतरिक व्यापार की प्रोन्नति में भारतीय चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री की भूमिका।

इकाई-XI. अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय– **(पीरियड- 12)**

- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रकृति, महत्व एवं इसमें अन्तर्निहित उलझनें व कठिनाईयाँ।
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय में प्रवेश करने के तरीके व माध्यम।
- अनुज्ञप्ति– लाइसेंस एवं मताधिकारी, लाभ, सीमाएँ।
- संयुक्त उपक्रम– लाभ, हानियाँ, सम्पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक इकाइयां / कम्पनियाँ, लाभ सीमाएँ
- निर्यात एवं आयात– विधियाँ व प्रलेखीकरण, विदेश व्यापार संवर्द्धन, संगठनात्मक सहायता एवं प्रलोभन, निर्यात प्रक्रिया क्षेत्र व विशेष आर्थिक क्षेत्र की प्रकृति एवं महत्व।
- **अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संस्थायें व समझौते–** WTO (विश्व व्यापार संगठन), UNCTAD, विश्व बैंक, IMF (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष)।

इकाई XII. प्रोजेक्ट कार्य (प्रस्तावित / दृष्टांत युक्त प्रोजेक्ट्स)– **(पीरियड- 22)**

- स्थानीय व्यवसायिक इकाई से उनके विभिन्न उद्देश्यों को तलाशें जिसे वे महत्ता देते हैं।
- एक व्यापारिक इकाई को स्थापित करने तथा उसे चलाने की समस्या।
- प्रश्नावली के माध्यम से चलन्त व्यवसाय की नैतिकता की जांच।
- बैंक के गुणवत्ता का सर्वेक्षण, स्थानीय ब्रांच कार्यालय में।
- डाक एवं कुरियर मेल सेवा का अध्ययन।
- बचत योजना में प्रचार, पैकेजिंग, निवेश आदि ऐजेंसियों का अध्ययन।
- एकल व्यवसायी/संयुक्त व्यवसायी के व्यवसाय के कार्य व प्रकृति का अध्ययन।
- संयुक्त हिन्दू परिवार के व्यवसाय का अध्ययन।
- लघु व्यवसायिक इकाई हेतु वित्त के स्रोत का अध्ययन।
- विभिन्न व्यवसायिकों की प्रकृति (यथा– ठेलावाले, फुटपाथी व्यवसायिकों के पूंजी निवेश एवं सामग्री प्रकरण) का अध्ययन।
- स्थानीय स्तर पर साप्ताहिक बाजार का अध्ययन।
- फ्रेंचाईजी खुदरा स्टोर का अध्ययन।
- आयात/निर्यात वस्तुओं का अध्ययन।
- व्यवसायों में महिला उद्यमियों की समस्यायें।
- रद्दी / कूड़ा निष्पादन।
- लोक उद्यम हेतु स्क्रैपबुक तैयार करना एवं विभिन्न विषय संबंधी सामग्रियां इकट्ठा करना।
- प्रोजेक्ट रिपोर्ट अंक निर्धारण विभिन्न भागों के अनुसार निर्धारित होगा, यथा–
  1. उद्देश्य 2. प्रणाली 3. निष्कर्ष– प्राप्य एवं सुझाव।

अनुमोदित पुस्तकों के नाम–

1. **व्यवसाय अध्ययन** (कक्षा-11 हेतु) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

ACCOUNTANCY

Class-XI

Rationale

The course in 'Accountancy' is introduced at +2 stage of Senior Secondary education, as formal commerce education is provided after first ten years of schooling.

With the fast changing economic scenario and business environment in state of continuous flux, elementary business education along with accountancy as the language of business and as a source of financial information has carved out a place for itself at the Senior Secondary stage. Its syllabus content should give students a firm foundation in basic accounting principles and methodology and also acquaint them with the changes taking place in the presentation and analysis of accounting information, keeping in view the development of accounting standards and use of computers.

Against this background, the course puts emphasis on developing basic understanding about the nature and purpose of the accounting information and its use in the conduct of business operations. This would help to develop among students' logical reasoning, careful analysis and considered judgement.

Accounting as an information system aids in providing financial information. The emphasis of Class-XI is placed on basic concepts and the process of accounting leading to the preparation of accounts for a sole proprietorship firm. Computerised accounting is becoming more and more popular with increased awareness about use of computers in business. Keeping this in view, the students are exposed compulsorily to the basic knowledge about computers and its use in accounting in the same year.

Objectives

- To familarise the students with accounting as an information system;
- To acquaint the student with basic concepts of accounting and accounting standards;
- To develop the skills of using accounting equation in processing business transactions;
- To develop an understanding about recording of business transactions and preparation of financial statements.
- To enable the students with accounting for reconstitution of partnership firms;
- To enable the students to understand and analyse the financial statements; and
- To familarise students with the fundamentals of computerised system of accounting.

Course Structure

Accountancy syllabus has been divided into four-semester course at the higher secondary stage. Each semester would be for about six months duration.

CLASS-XI

Semester - I : Financial Accounting-I

Semester - II : Financial Accounting-II

COURSE STRUCTURE

Class-XI

One Paper **Three Hours** **Marks : 100**

Units		Periods	Marks
A. Financial Accounting - I			
Unit-I	Introduction to Accounting	14	07
Unit-II	Theory Base of Accounting	14	07
Unit-III	Recording of Business Transactions	26	16
Unit-IV	Trial Balance and Rectification of Errors	22	08
Unit-V	Depreciation, Provision and Reserves	22	12
Unit-VI	Accounting for Bills of Exchange Transactions	22	10
	Total	**120**	**60**
B. Financial Accounting - II			
Unit-VII	Financial Statements	44	25
Unit-VIII	Accounts from incomplete records	08	05
Unit-IX	Computers in Accounting	18	06
Unit-X	Accounting and Database System	18	04
	Total	**88**	**40**

SEMESTER-I

Financial Accounting-I ***(Total Periods : 120)***

Unit - I : Introduction to Accounting **(Periods : 14)**

- Accounting – Meaning, Objectives, Accounting as source of information, Internal and External users of accounting information and their needs.
- Qualitative Characteristics of Accounting Information – Reliability, Relevance, Understandability and Comparability.
- Basic Accounting Terms – Asset, Liability, Capital, Expense, Income, Expenditure, Revenue, Debtros, Creditors, Goods, Cost, Gain, Stock, Purchase, Sales, Loss, Profit, Voucher, Discount, Transaction, Drawings.

Unit - II : Theory Base of Accounting **(Periods : 14)**

- Accounting Principles – Meaning and Nature
- Accounting Concepts : Entity, Money Measurement, Going Concern, Accounting Period, Cost Consistency, Conservation, Materiality.
- Accounting Standards – Concept and List of Indian Accounting Standards.
- Accounting Mechanism – Single Entry and Double Entry.
  Bases of Accounting – Cash Basis, Accrual Basis.

Unit - III : Recording of Business Transactions **(Periods : 26)**

- Voucher and Transactions : Origin of Transactions – Source documents and Vouchers, Preparation of vouchers; Accounting equation approach – Meaning and Analysis of transactions using accounting equation; Rules of debit and credit.
- Recording of Transactions : Books of original entry – Journal, Special purpose books (i) Cash book – Simple, Cash book with bank column and Petty cashbook, (ii) Purchase Book, Sales book, Purchase returns books, Sales returns book; Ledger: Meaning, Utility, Format; Posting from journal and subsidiary books; Balancing of accounts.
- Bank Reconciliation Statement : Meaning, Need and Preparation, Corrected cash book balance.

Unit - IV : Trial Balance and Rectification of Errors **(Periods : 22)**

- Trial Balance Meaning, Objectives and Preparation.
- Errors : Types of Errors; Errors affecting trial balance; Errors not affecting trial balance.
- Detection and Rectification of Errors (one sided and two sided) : uses of suspense account.

Unit - V : Depreciation, Provisions and Reserves **(Periods : 22)**

- Depreciation : Meaning and Need for charging depreciation, Factors affecting depreciation, Methods of depreciation – Straight line method, Written down value method (excluding change in method), Method of recording depreciation – charging to asset account, creating provision for depreciation / accumulated depreciation account; Treatment of disposal of an asset.
- Provisions and Reserves : Meaning, Importance, Difference between provisions and reserves, Types of reserves : Revenue reserve, Capital reserve, General reserve, Specific reserve and Secret reserve.

Unit - VI : Accounting for Bills of Exchange Transactions **(Periods : 22)**

- Bills of exchange and Promissory note : Definition, Features, Parties, Specimen and Distinction.
- Important Terms : Term of Bill, Concept of Accommodation Bill, Days of grace, Date of maturity; Bill after date, Negotiation, Endorsement, Discounting of bill, Dishonour, Retirement and Renewal of a bill.
- Accounting treatment of bill transactions.

SEMESTER-II

(Total Periods : 88)

Financial Accounting-II **(Periods : 44)**

Unit - VII : Financial Statments

- Financial Statements : Meaning and Users.
- Distinction between capital expenditure and revenue expenditure
- Trading and Profit and Loss Account : Gross profit, Operating profit, Net profit.
- Balance Sheet : Need, Grouping, Marshalling of assets and liabilities, Vertical presentation of financial statement.
- Adjustments in preparation of financial statements with respect to Closing stock, Outstanding expenses, Prepaid expenses, Accrued income, Income received in advance, Depreciation, Bad debts, Provision for doubtful debts, Provision for discount on debtors, Managers' commission.
- Preparation of trading and profit and loss account and balance sheet of sole proprietorship.

Unit - VIII : Accounts from Incomplete Records **(Periods : 08)**

- Incomplete Records : Meaning, Uses and Limitations
- Ascertainment of Profit / loss by Statement of Affairs method.
- Preparation of trading and profit and loss account and balance sheet.
- Ascertaining missing figures in Total debtors account, Total creditors account, Bill receivables, Bills payables and Cash book and Opening statement of affairs.

Unit - IX : Computers in Accounting **(Periods : 18)**

- Introduction to Computer and Accounting Information System (AIS).
- Application of computers in accounting :
  – Automation of accounting process, designing accounting reports, MIS reporting, data exchange with other information systems.
- Comparison of accounting process in manual and computerised accounting, highlighting advantages and limitations of automation.
- Sourcing of accounting system : Readymade and customised and tailor-made accounting system. Advantages and disadvantages of each option.

Unit - X : Accounting and Database System **(Periods : 18)**

- Accounting and Database Management System.
- Concept of Entity and Relationship : Entities and relationships in an Accounting System : Designing and Creating Simple Tables, Forms, Queries and Reports in the context of accounting system.

BOOKS RECOMMENDED :

1. **Accountancy (Financial Accounting, Part-I) :** Developed by NCERT, Delhi & Printed by B.T.B.C., Bihar)
2. **Accountancy (Financial Accounting, Part-II) :** Developed by NCERT, New Delhi & Printed by B.T.B.C., Bihar)

लेखांकन

Class-XI

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक | समय : 3 घंटे | कुल अंक : 100

इकाई		पीरियड	अंक
A. वित्तीय लेखांकन - I			
इकाई-I	लेखांकन का परिचय	14	07
इकाई-II	लेखांकन का सैद्धांतिक आधार	14	07
इकाई-III	व्यवसायिक लेन-देनों का अभिलेखन	26	16
इकाई-IV	तलपट एवं अशुद्धियों का शोधन	22	08
इकाई-V	ह्रास, प्रावधान एवं संचय	22	12
इकाई-VI	विनिमय विपत्रों के लेन-देन का लेखांकन	22	10
	कुल	120	60
B. वित्तीय लेखांकन - II			
इकाई-VII	वित्तीय विवरण	44	25
इकाई-VIII	अपूर्ण अभिलेख के खाते	08	05
इकाई-IX	कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली	18	06
इकाई-X	लेखांकन और डाटा बेस प्रणाली	18	04
	कुल	88	40

भाग– 'अ' : वित्तीय लेखांकन (भाग-I)

कुल पीरियड- 120

इकाई-I : लेखांकन का परिचय– (पीरियड- 14)

- **लेखांकन**– अर्थ, उद्देश्य, लेखांकन एक सूचना प्रणाली के रूप में, लेखांकन सूचनाओं के आंतरिक एवं बाह्य उपयोगकर्त्ता और आवश्यकताएँ।
- **लेखांकन सूचनाओं की गुणात्मक विशेषताएँ**– विश्वसनीयता, सार्थकता, समझने योग्य व तुलना योग्य।
- **आधारभूत लेखांकन शब्दावली**– सम्पत्ति, दायित्व, पूँजी, व्यय, आय, पूँजी व्यय, आगमन, देनदार, लेनदार, माल, लागत, वृद्धि, रहतिया, क्रय, विक्रय, हानि, लाभ, प्रमाणक, छूट, लेन-देन, आहरण।

इकाई-II : लेखांकन का सैद्धांतिक आधार– (पीरियड- 14)

- **लेखांकन सिद्धांत**– अर्थ एवं प्रकृति।
- **लेखांकन अवधारणायें**– लेखांकन इकाई, मुद्रा माप जारी रहना, लेखांकन अवधि, लागत विचार, दोहरा पक्ष, आगम निर्धारण, मिलान, अर्जित, पूर्ण-अभिव्यक्ति, समरूपता, रूढ़िवादिता, महत्वपूर्ण तथ्यात्मकता।
- **लेखा मानक**– अवधारणा एवं भारतीय लेखांकन मानक की सूची एवं
- **लेखांकन की विधि**– एक स्तंभीय रोकड़-बही, द्वि-स्तंभीय रोकड़-बही।
- **लेखांकन का आधार**– नगद आधार, उपार्जन आधार।

इकाई-III : व्यावसायिक लेन-देनों का अभिलेखन– (पीरियड- 26)

- **व्यवसायिक सौदे तथा प्रलेख**– स्त्रोत, प्रलेख एवं प्रमाणक, प्रमाणकों का निर्माण।

- **लेखांकन समीकरण दृष्टिकोण**– अर्थ एवं लेन-देनों का विश्लेषण; नाम व जमा के नियम।
- **लेन-देन का लेखा**– प्रारंभिक व मूल बही, रोजनामचा, विशेष उद्देश्य बही– रोकड़ बही साधारण, बैंक कॉलम के साथ एवं खुदरा रोकड़ बही, क्रय बही, विक्रय बही।
- **खाता बही**– अर्थ, उपयोगिता, प्रारूप; रोजनामचा एवं सहायक बहियों से खतौनी, खातों का शेष निकालना।
- **बैंक समाधान विवरण**– अर्थ, आवश्यकता एवं निर्माण, संशोधित रोकड़ शेष

इकाई-IV : **तलपट एवं अशुद्धियों का शोधन**– (पीरियड- 22)

- **तलपट**– अर्थ, उद्देश्य एवं निर्माण।
- **अशुद्धियाँ**– प्रकार, तलपट को प्रभावित करने व न करनेवाली अशुद्धियाँ।
- अशुद्धियों का पता लगाना एवं उनका शोधन (एक पक्षीय व द्विपक्षीय अशुद्धियाँ); उन्नत खाता का प्रयोग।

इकाई-V : **ह्रास, प्रावधान एवं संचय**– (पीरियड- 22)

- **ह्रास**– अर्थ एवं ह्रास प्रावधान की आवश्यकता, ह्रास को प्रभावित करनेवाले कारक।
- **ह्रास की विधि**– स्थायी किश्त विधि एवं ह्रासमान शेष पद्धति (विधि परिवर्तन संबंधी आंकलन को छोड़कर)।
- **ह्रास के लेखा करने की विधियाँ**– सम्पत्ति खाता, ह्रास प्रावधान खाता एवं सम्पत्ति विक्रय खाता का व्यवहार।
- **प्रावधान एवं संचय**– अर्थ, महत्व, अन्तर।
- **संचय के प्रकार**– आगम संचय, पूंजी संचय, सामान्य संचय, विशेष संचय एवं गुप्त संचय।

प्रैक्टिकल

इकाई-VI : **विनिमय विपत्रों के लेन-देन का लेखांकन**– (पीरियड- 22)

- **विनिमय विपत्र एवं प्रतिज्ञा-पत्र**– अर्थ, विशेषता, पक्ष, नमूना एवं अंतर।
- **महत्वपूर्ण शब्दावली**– बिल की अवधि, अनुग्रह बिल का अर्थ, अनुग्रह दिवस, भुगतान तिथि, दर्शनी हुंडी, बेचान, बिलों का भुनाना, बिल की अप्रतिक्ष्या, भुगतान तिथि से पूर्व बिल का भुगतान एवं बिल का नवीकरण।
- बिल के लेन-देन का लेखांकन व्यवहार।

भाग– 'अ' : वित्तीय लेखांकन (भाग-II)

कुल पीरियड- 88

इकाई-VII : **वित्तीय विवरण**– (पीरियड- 44)

- **वित्तीय विवरण**– अर्थ एवं उपयोगकर्त्ता।
- **पूँजीगत व्यय एवं आवगत व्यय में अंतर।**
- **व्यापारिक व लाभ-हानि खाता**– कुल लाभ एवं शुद्ध लाभ तथा संचालन लाभ।
- **आर्थिक चिट्ठा**– आवश्यकता, सम्पत्तियाँ व दायित्वों का समूहन, वित्तीय विवरणों का क्षैतिज प्रस्तुतिकरण।
- **वित्तीय विवरण के निर्माण के दौरान समायोजन**– अन्तिम रहतिया, अदत्त व्यय, पूर्वदत्त व्यय, उपार्जित आय व व्यय, ह्रास एवं डूबत ऋण, संदिग्ध ऋण का प्रावधान, देनदारों पर छूट का प्रावधान, प्रबन्धक का कमीशन।
- व्यापारिक व लाभ-हानि खाता बनाना तथा चिट्ठा बनाना (एकल स्वामित्व वाले व्यापार का)।

इकाई-VIII : **अपूर्ण अभिलेखों से खाते**– (पीरियड- 08)

- **अपूर्ण अभिलेख**– अर्थ, उपयोग एवं सीमाएँ, अवस्था विवरण का निर्माण एवं इसके द्वारा लाभ हानि, व्यापार एवं लाभ हानि, खाता तथा तुलन पत्र तैयार करना, अवस्था विवरण एवं तुलन-पत्र में अंतर, उधार क्रय निर्धारण, उधार विक्रय निर्धारण, प्राप्य विपत्र एवं देय विपत्र का निर्धारण, रोकड़ पुस्तक के सारांश द्वारा अनुपलब्ध सूचनाओं का निर्धारण।

इकाई-IX : **कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली**– (पीरियड- 18)

- **कम्प्यूटर और लेखांकन सूचना प्रणाली का परिचय**– लेखांकन में कम्प्यूटर की उपयोगिता, लेखांकन प्रक्रिया का स्वचालन, लेखांकन रिपोर्ट की रूपरेखा तैयार करना, लेखांकन सूचना प्रणाली एवं निर्माण सूचना प्रणाली।
- हस्तलिखित एवं कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली के लाभ एवं दोष, लेखांकन पैकेज एवं लेखांकन के सॉफ्टवेयर स्त्रोत।

इकाई-X : लेखांकन और डाटाबेस प्रणाली– (पीरियड- 18)

- लेखांकन एवं डाटाबेस प्रणाली।
- अस्तित्व एवं संबंध की अवधारणा, लेखांकन प्रणाली में अस्तित्व एवं संबंध, सरल सारणी की संरचना एवं रूपरेखा, प्रकार, पृच्छा एवं रिपोर्ट- लेखांकन पद्धति के संबंध में।

अनुमोदित पुस्तकों के नाम–

1. **लेखाशास्त्र** (वित्तीय लेखांकन, भाग-1) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।
2. **लेखाशास्त्र** (वित्तीय लेखांकन, भाग-2) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

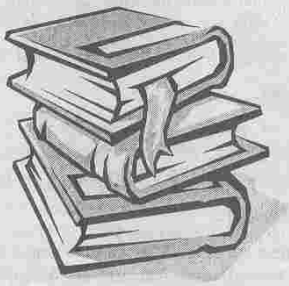

ENTREPRENEURSHIP

Class-XI

Rationale

Development of School curriculum is a dynamic process, responsive to the society & reflecting the needs & aspiration of its learners. Fast changing society observes changes in educational curriculum particularly to establish relevance to emerging socio-economic environment, to ensure equity of opportunity & participation & finally promoting concern for excellence. In this context the course on enterreneurship aims at instilling and stimulating human urge for excellence by realizing individual potential for generating and putting to use the inputs, relevant to social prosperity and thereby ensure decent means of living for every individual.

Objectives :

Acquiring Enterpreneurial spirit & be Enterprising in all walks of life.

* Familirization with various uses of human resource for earning decent means of living.
* Understanding the concept & process of Enterpreneurship its contribution and role in the growth & development of individual & the nation.
* Acquiring enterpreneurial quality, competency and motivation.
* Learning the process & skills of creation & management of enterpreneurial venture.

THEORY **Total Marks : 70**

Unit - I : (A) Enterpreneurship & Human activities **30 Makrs**

* Concept, Function & Need
* Enterpreneurship Characteristics and Competency
* Relevance of enterpreneurship to Socio-economic gain - generating national wealth, creating wage & self employment, Micro, Small & medium enterprises, optimizing human & natural resource and Solving Problems in the path of prosperity, building enterprising Personality and Society.
* Process of enterpreneurship development.

(B) Enterpreneurial pursuits & Human activities

* Nature, purpose & pattern of human activities - Economic & non-economic, Need for innovation.
* Rationale & relationship of enterpreneurial pursuits & human activities.

Unit - II : Acquiring enterpreneurial values & motivation **30 Makrs**

* Enterpreneurial values, Altitude & motivation, Meaning & concept.
* Developing Enterpreneurial motivation & competency - Concept and process of Achievement Motivation, Self-efficacy, Creativity, Risk Taking, Leadership, Communication and Influencing Ability and Planning Action.
* Barriers to Enterpreneurship.
* Help & support to Entrepreneurs.

Unit - III : Introduction to market dynamics **10 Makrs**

* Understanding a Market.
* Competitive Analysis of the Market.
* Patents, Trademarks & Copyright.

PRACTICAL

30 Makrs

I. Study visit by students to any enterprise of own choice with the help of a schedule / questionnaire the students will record observation regarding the backs ground of enterpreneur, reasons for selecting the enterpreneurial career, starting the enterprise the type of enterprise, the process of setting this enterprise, Products / services, Production process, investment made & marketing practices followed. Profit or loss, growth & development, problems faced, institutions / organisations which offer support and enterpreneur's level and type of satisfaction.

II. Preparation of a brief report based on the observation made during study visit to an enterprise.

उद्यमिता

Class-XI

कुल अंक- 70

इकाई-I : उद्यमिता एवं मानवीय क्रियाएँ–

'अ' उद्यमिता

(30 अंक)

- विचार, कार्य एवं आवश्यकता।
- उद्यमिता की विशेषताएँ व योग्यताएँ अथवा सामर्थ्य।
- **सामाजिक-आर्थिक लाभ के साथ उद्यमिता की सम्बद्धता–** राष्ट्रीय सम्पत्ति का निर्माण, स्व-रोजगार एवं नौकरी का उपलब्धिकरण, व्यष्टि, लघु एवं मध्यम उपक्रम, मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों को अनुलतम स्तर पर लाना, सम्पन्नता को बाधित करने वाली समस्याओं का समाधान, सामरस व्यक्तित्व व समाज का निर्माण।

'ब' उद्यमिता की खोज एवं मानवीय क्रियाएँ

- **मानवीय क्रियाओं की प्रकृति, उद्देश्य एवं प्रारूप–** आर्थिक व गैर-आर्थिक, नयी तकनीक की आवश्यकता।
- उद्यमिता की खोज एवं मानवीय क्रियाओं में सम्बद्धता एवं तर्कसंगतता।

इकाई-II : उद्यमिता मूल्य अर्जन एवं अभिप्रेरण–

(30 अंक)

- **उद्यमित मूल्य, मनोवृत्ति एवं अभिप्रेरण–** अर्थ एवं विचारधारा।
- **उद्यमिता अभिप्रेरण एवं योग्यता को विकसित करना–** अभिप्रेरण प्राप्ति की विचारधारा व विधियाँ, स्व-क्षमता, रचनात्मकता, जोखिम वहन, नेतृत्व गुण, संप्रेषण एवं प्रभावी योग्यता एवं योजना क्रियाएँ।
- उद्यमिता की बाधाएँ।
- उद्यमियों की समर्थन व सहायता।

इकाई-III : बाजार क्षमता व गति का परिचय–

(10 अंक)

- बाजार को समझना।
- बाजार का प्रतिस्पर्द्धात्मक विश्लेषण।
- पेटेन्ट, ट्रेडमार्क एवं कॉपीराइट।

प्रायोगिक

कुल अंक- 30

- शिक्षार्थी द्वारा अपनी इच्छा से किसी भी उद्यम का अध्ययन के दृष्टिकोण से भ्रमण करना। अनुसूची एवं प्रश्नावली के माध्यम से उद्यम की पृष्ठभूमि, उद्यम व्यवसाय को चुनने का कारण, उद्यम शुरू करना, उद्यम के प्रकार, उद्यम को प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया, परिणाम, संस्थायें, निर्णय प्रक्रिया, निवेश और बाजारू तरीके का अनुसरण, लाभ और हानि, विकास एवं वृद्धि, समस्याओं का अनुभव, संस्था/संगठन आदि का अध्ययन जो कि उद्यमी को उद्यम स्तर हेतु संतुष्ट करता हो।
- किसी उद्यम के अध्ययन-भ्रमण के क्रम में प्रेक्षण पर आधारित एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करना।

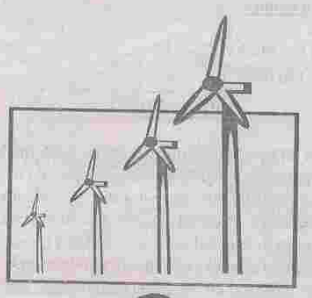

ECONOMICS

Class-XI

Rationale

Economics is one of the Social Sciences, which has great influence on every human being. As economic life and the economy go through changes, the need to ground education in Children's own experience becomes essential. While doing so, it is imperative to provide them opportunities to acquire analytical skills to observe and understand the economic realities.

At senior secondary stage, the learners are in a position to understand abstract ideas, exercise the power of thinking and to develop their own perception. It is at this stage, the learners are exposed to the rigour of the discipline of economics in a systematic way.

The economics courses are introduced in such a way that in the initial stage, the learners are introduced to the economic realities that the nation is facing today along with some basic statistical tools to understand these broader economic realities. In the later stage, the learners are introduced to economics as a theory of abstraction.

The economic courses also contain many projects and activities. These will provide opportunities for the learners to explore various economic issues both from their day-to-day life and also from issues, which are broader and invisible in nature. The academic skills that they learn in these courses would help to develop the projects and activities. The syllabus is also expected to provide opportunities to use information and communication technologies to facilitate their learning process.

Objectives

1. Understanding of some basic economic concepts and development of economic reasoning which the learners can apply in their day-to-day life as citizens, workers and consumers.
2. Realisation of learner's role in nation building and sensitivity to the economic issues that the nation is facing today.
3. Equipment with basic tools of economics and statistics to analyse economic issues. This is pertinent for even those who may not pursue this course beyond senior secondary stage.
4. Development of understanding that there can be more than one views on any economic issue and necessary skills to argue logically with reasoning.

COURSE STRUCTURE

Class-XI

One Paper **Three Hours** **Marks : 100**

Units		Periods	Marks
A. Statistics for Economics			
Unit-I	Introduction	05	03
Unit-II	Collection, Organization and Presentation of Data	25	12
Unit-III	Statistical Tools and Interpretation	64	30
Unit-IV	Developing Projects in Economics	10	05
	Total	**104**	**50**
B. Indian Economic Development			
Unit-V	Development Policies and Experience (1947-90)	18	10
Unit-VI	Economic Reforms (since 1991)	14	08
Unit-VII	Current Challenges facing Indian Economy	60	25
Unit-VIII	Development experience of India - A comparison with neighbours	12	07
	Total	**104**	**50**

PART A : STATISTICS FOR ECONOMICS

In this course, the learners are expected to acquire skills in collection, organisation and presentation of quantitative and qualitative information pertaining to various simple economic aspects systematically. It also intends to provide some basic statistical tools to analyse, interpret any economic information and draw appropriate inferences. In this process, the learners are also expected to understand the behaviour of various economic data.

Unit - I : Introduction (5 Periods)

What is Economics ?

Meaning, scope and importance of statistics in Economics.

Unit - II : Collection, Organization and Presentation of data (25 Periods)

Collection of data – Sources of data : Primary and secondary; how basic data is collected; methods of collecting data; Some important sources of secondary data : Census of India and National Sample Survey Organisation.

Organisation of Data : Meaning and types of variables; Frequency Distribution.

Presentation of Data : Tabular Presentation and Diagrammatic Presentation of Data : (i) Geometric forms (bar diagrams and pie diagrams), (ii) Frequency diagrams (histogram, polygon and ogive) and (iii) Arithmetic line graphs (time series graph).

Unit - III : Statistical Tools and Interpretation (64 Periods)

(For all the numerical problems and solutions, the appropriate economic interpretation may be attempted. This means, the students need to solve the problems and provide interpretation for the results derived)

Measures of Central Tendency : Mean (simple and weighted), median and mode.

Measures of Dispersion : Absolute dispersion (range, quartile deviation, mean deviation and standard deviation) relative dispersion; (co-efficient of Quartile deviation, co-efficient of mean deviation, co-efficient of variation); Lorenz Curve : Meaning and its application.

Correlation : Meaning, scatter diagram; Measures of correlation - Karl Pearson's method (two variables ungrouped data) Spearman's rank correlation.

Introduction to Index Numbers : Meaning, types - wholesale price index, consumer price index and index of industrial production, uses of index numbers; Inflation and index numbers.

Unit - IV : Developing Projects in Economics (10 Periods)

The students may be encouraged to develop projects, which have primary data, secondary data or both. Case studies of a few organisations / outlets may also be encouraged. Some of the examples of the projects are as follows (they are not mandatory but suggestive) :

(i) A report on demographic structure of your neighbourhood;

(ii) Consumer awareness amongst households

(iii) Changing prices of a few vegetables in your market

(iv) Study of a co-operative institution : milk co-operatives.

The idea behind introducing this unit is to enable the students to develop the ways and means by which a project can be developed using the skills learned in the course. This includes all the steps involved in designing a project starting from choosing a title, exploring the information relating to the title, collection of primary and secondary data, analysing the data, presentation of the project and using various statistical tools and their interpretation and conclusion.

PART B : INDIAN ECONOMIC DEVELOPMENT

Unit - V : Development Policies and Experience (1947-90) (18 Periods)

A brief introduction of the state of Indian economy on the eve of independence.

Common goals of Five Year Plans.

Main features, problems and policies of agriculture (institutional aspects and new agricultural strategy, etc.), industry (industrial licensing, etc.) and foreign trade.

Unit - VI : Economic Reforms (since 1991) **(14 Periods)**

Need and main features : liberalisation, globalisation and privatisation.
An appraisal of LPG policies.

Unit - VII : Current challenges facing Indian Economy **(60 Periods)**

Poverty : Absolute and relative; Main programmes for poverty alleviation : A critical assessment;
Rural Development : Key issues – credit and marketing - role of co-operatives; agricultural diversification; alternative farming - organic farming.
Human Capital Formation : How people become resource; Role of human capital in economic development; Growth of Education Sector in India.
Employment : Growth, informalisation and other issues : Problems and policies
Infrastructure : Meaning & types, Case studies - Energy & Health, Problem and policies, A critical assessment.
Sustainable Economic Development :
Meaning; Effects of Economic Development on Resources and Environment.

Unit - VIII : Development Experience of India (A comparison with neighbours) **(12 Periods)**

India and Pakistan
India and China
Issues : Growth, population, sectoral development and other developmental indicators.

अनुशंसित

BOOKS RECOMMENDED :

1. **Statistics for Economics :** Developed by NCERT,New Delhi & Printed by B.T.B.C., Bihar)
2. **Indian Economic Development :** Developed by NCERT, New Delhi & Printed by B.T.B.C., Bihar)

अर्थशास्त्र

Class-XI

औचित्य :

समाजशास्त्र के एक भाग के रूप में अर्थशास्त्र है जो प्रत्येक मानव के नियति को प्रभावित करता है फिर भी भारत के विद्यालय के पाठ्य-क्रम में इस पर नगण्य ध्यान दिया गया है। चूँकि आर्थिक जीवन और अर्थव्यवस्था परिवर्तन के दौर से गुजरते हैं, बच्चों को इसके आधारभूत शिक्षा एवं अपने अनुभव की आवश्यकता है।

ऐसा करने में, यह आवश्यक है कि उन्हें आर्थिक वास्तविकता को अध्ययन एवं समझने के साथ-साथ इसके विश्लेषण की कुशलता प्राप्त हो। अर्थशास्त्र को एक काल्पनिक विषय के रूप में विद्यालय शिक्षा के प्रारंभिक काल में पढ़ाना, विषय के निरर्थक शिक्षा के रूप में होगा।

उच्च शिक्षा के स्तर पर, छात्र इस स्थिति में होते हैं कि वे काल्पनिक विचारों को समझने में सक्षम होते हैं। वे इसके लिए सक्षम होते हैं कि इस पर अपनी सोच-शक्ति का व्यवहार कर सकें और अपनी समझ तैयार कर सकें। यह एक ऐसी स्थिति है जबकि शिक्षार्थियों को अर्थशास्त्र के कठोर शिष्टाचार से सुचारू ढंग से परिचय कराया जाता है।

अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम को इस प्रकार लागू किया जाता है कि प्रारंभिक स्तर पर शिक्षार्थियों को आर्थिक वास्तविकता जो आज राष्ट्र के समक्ष है से परिचय कराया जाता है। इसके साथ-साथ मूलभूत सांख्यिकी उपकरणों के साथ विस्तृत आर्थिक वास्तविकता से भी परिचय कराया जाता है। बाद में शिक्षार्थियों का परिचय अर्थशास्त्र एक काल्पनिक सिद्धांत के रूप में कराया जाता है।

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रमों में कई योजनाएँ एवं कार्यकलाप हैं। ये शिक्षार्थियों को विभिन्न प्रकार के आर्थिक मुद्दों जो दैनिक जीवन तथा जो वृहद और अदृश्य हैं दोनों को तलाशने का अवसर प्रदान करता है। ज्ञानवर्द्धक कुशलता जो उन्हें इन पाठ्य-वस्तुओं से प्राप्त होता है उन्हें परियोजना और कार्यकलापों में सहाय्य होता है। पाठ्य-क्रम इस बात के भी अवसर प्रदान करता है कि वे विषय-वस्तु, संचार तकनीकों के अवसर प्राप्त करें ताकि उनके शिक्षा ग्रहण की प्रक्रिया सुचारू रूप से चले।

उद्देश्य :

1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएँ तथा आर्थिक तर्क को समझने तथा शिक्षार्थी दैनिक जीवन में काम करने वाले अथवा उपभोक्ता के रूप में इनका उपयोग कर सकें।
2. शिक्षार्थियों की राष्ट्र-निर्माण में भूमिका अदा करने की अनुभूति पैदा करना और उन्हें राष्ट्र के समक्ष वर्तमान आर्थिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाना।
3. आर्थिक मुद्दों के विश्लेषण के लिए शिक्षार्थियों को आधारभूत उपकरण मुहैया कराना। यह उनके लिए भी युक्तिसंगत है जो आगे चलकर अर्थशास्त्र का उच्च स्तर पर अध्ययन कर रहे हैं।
4. एक प्रकार की समझ पैदा करना कि किसी भी आर्थिक मुद्दे के एक से अधिक दृष्टिकोण हो सकते हैं तथा इन मुद्दों पर तर्क के आधार पर बहस करने की कुशलता प्राप्त करना।

अर्थशास्त्र की पढ़ाई उच्च माध्यमिक स्तर पर चार सत्रों में होगी। प्रत्येक सत्र का विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक | समय : 3 घंटे | कुल अंक : 100

इकाई		पीरियड	अंक
A. अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकी			
इकाई-I	परिचय	05	03
इकाई-II	आंकड़ों का संग्रह एवं समायोजन	25	12
इकाई-III	सांख्यिकी उपकरण एवं निष्कर्ष	64	30
इकाई-IV	अर्थशास्त्र में परियोजनाओं का विकास	10	05
	कुल	104	50
B. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास			
इकाई-VII	विकास की नीतियाँ और अनुभव (1947-90)	18	10
इकाई-VIII	आर्थिक सुधार (1991 से)	14	08
इकाई-IX	भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान चुनौतियाँ	60	25
इकाई-X	भारत और इसके पड़ोसी देशों के तुलनात्मक विकास का अनुभव	12	07
	कुल	104	50

अर्थशास्त्र

1. अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकी एवं
2. भारतीय आर्थिक विकास

पाठ्य-वस्तु-I : अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकी

इस पाठ्य-वस्तु में शिक्षार्थियों से अपेक्षित है कि वे सुचारू रूप से आर्थिक आयामों से संबंध, विभिन्न उपलब्ध वस्तुओं को गुणात्मक एवं मात्रात्मक रूप से विश्लेषण बिल्कुल ही साधारण ढंग से कर सकें। इसके अलावा यह पाठ्यक्रम विभिन्न सांख्यिकी उपकरणों की सहायता से आर्थिक वस्तु-स्थिति का विश्लेषण और व्याख्या करने के योग्य बनाता है और ताकि वे स्वयं किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकें। ऐसा करने में शिक्षार्थी से अपेक्षित है कि विभिन्न आर्थिक आंकड़ों के व्यवहार को समझ सकें।

इकाई-I : परिचय **(5 पीरियड)**

- अर्थशास्त्र क्या है ?
- अर्थशास्त्र में सांख्यिकी का अर्थ, विषय-क्षेत्र और महत्व।

इकाई-II : आंकड़ों का संग्रह एवं समायोजन **(25 पीरियड)**

- **आंकड़ों का समायोजन–** आंकड़ों के स्रोत, प्राथमिक और द्वितीयक, किस प्रकार से मूल आंकड़े को संग्रह किया जाता है, आंकड़ों को संग्रह करने की विधा।
- **द्वितीयक आंकड़ों के कुछ महत्वपूर्ण स्रोत–** भारत की जनगणना और राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन।
- **आंकड़ों का संगठन–** चर का अर्थ और प्रकार, बारम्बारता वितरण
- **आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण–** आंकड़ों का सारणीबद्ध एवं आरेखात्मक प्रस्तुतिकरण।
  - (क) ज्यामितीय आकार, दंड आरेख और वृत्त आरेख
  - (ख) बारंबारता आरेख, आयत चित्र, बहुभुज एवं तोरण और
  - (ग) अंक गणितीय रेखा चित्र (समय श्रृंखला ग्राफ)

इकाई-III : सांख्यिकी उपकरण एवं निष्कर्ष **(64 पीरियड)**

- केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप, माध्य (सरल एवं भारित), माध्यिका एवं बहुलक
- परिक्षेपण के माप, परम परिक्षेपण, परस, चतुर्थक विचलन, विचलन का गुणांक, माध्य विचलन का गुणांक, लारेंज वक्र, अर्थ और उपयोगिता।

- **सहसंबंध–** अर्थ, प्रकीर्ण आरेख, सह संबंध को मापने की विधि, कार्ल पीअर्सन के दो चरों का अवर्गीकृत आंकड़ा और स्पीयरमैन का कोटि सह संबंध।
- **सूचकांक का परिचय–** अर्थ एवं प्रकार, थोक मूल्य सूचकांक, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक, कृषि उत्पादन सूचकांक, सूचकांक का उपयोग, मुद्रा स्फीति और सूचकांक।

(प्रत्येक अंकगणितीय सवालों एवं समाधानों के लिए उपयुक्त अर्थशास्त्रीय व्याख्या की जा सकती है। इसका अर्थ है कि शिक्षार्थी समस्याओं का समाधान कर जो परिणाम देते हैं उसकी व्याख्या प्रस्तुत करें।)

इकाई-IV : अर्थशास्त्र में परियोजनाओं का विकास (10 पीरियड)

- शिक्षार्थियों को परियोजनाओं के विकास के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। जो प्राथमिक आंकड़े, द्वितीयक आंकड़े या दोनों को सन्निहित किए हों। कुछ संगठनों के केस अध्ययन को भी प्रोत्साहित किया जा सकता है। कुछ योजनाओं के प्रारूप निम्नलिखित हैं–'(यद्यपि ये जरूरी नहीं लेकिन परामर्शयोग्य हैं ?)

(क) अपने पड़ोस के जनांकिकी संरचना पर एक रिपोर्ट

(ख) घर के लोगों में उपभोक्ता जागरूकता

(ग) आपके बाजार में कुछ सब्जियों के बदलते मूल्य

(घ) सहकारी संस्थानों का अध्ययन, दुग्ध सहकारी संस्था

COURSE - II

भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि शिक्षार्थी को भारतीय अर्थव्यवस्था के मूल प्रकरणों को उसकी पृष्ठभूमि की परिचर्या के आधार से परिचय कराना। इस प्रक्रिया में चूँकि वे एक जागरूक नागरिक हैं से आशा की जाती है कि वह इन आर्थिक प्रकरणों पर सरकार की भूमिका का आकलन करने में सक्षम हो सकेंगे।

यह पाठ्यक्रम यह भी जानने का सुअवसर प्रदान करता है कि किस तरह के आर्थिक संसाधन हमारे पास हैं, किस तरह से इन संसाधनों को विभिन्न क्षेत्रों में कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है ? इस तरह के गुणात्मक आंकड़ों को जानने के बाद शिक्षार्थी भारत के आर्थिक भविष्य एवं आर्थिक घटनाओं को समझने में सक्षम हो सकते हैं। इसका अर्थ कतई यह नहीं है कि शिक्षार्थियों पर आंकड़ों का बोझ डाला जाय। भारत की आर्थिक स्थिति की अपने पड़ोसी देशों से तुलना करने पर हमें यह भी अवसर मिलेगा कि हम अपने देश की स्थिति आंक सकें कि आज हमारी स्थिति कैसी है ? साथ ही साथ इससे शिक्षार्थियों को विभिन्न सारगर्भित विषयों को समझने एवं परिचर्चा करने का भी अवसर मिलेगा। जब शिक्षार्थी अपना पाठ्यक्रम पूरा कर लेंगे तब शिक्षार्थी विभिन्न मीडिया द्वारा जो आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत किया जाता है, उसे भी समझने में सक्षम हो सकेंगे।

इकाई-I : विकास की नीतियाँ और अनुभव (1947 - 90) (18 पीरियड)

- स्वतंत्रता के उपलक्ष्य पर भारतीय अर्थव्यवस्था का एक संक्षिप्त परिचय।
- पंचवर्षीय योजना के सामान्य लक्षण।
- भारतीय कृषि की मुख्य प्रकृति, समस्यायें और नीतियाँ (संस्थात्मक पक्ष एवं नवीन आर्थिक रणनीति आदि), उद्योग (औद्योगिक लाइसेंसिंग आदि) एवं विदेश व्यापार

इकाई-II : आर्थिक सुधार (1991) तक (14 पीरियड)

- आवश्यकता एवं मुख्य प्रकृति, उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं निजीकरण।
- LPG नीति का मूल्यांकन

इकाई-III : भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्त्तमान चुनौतियाँ (60 पीरियड)

- गरीबी, पूर्ण निर्धनता, अल्पमालिक निर्धनता, निर्धनता निवारण के मुख्य कार्यक्रम– एक समीक्षा।
- ग्रामीण विकास– मुख्य बिन्दु, ऋण एवं बाजार, सहकारी संस्थाओं की भूमिका, कृषि विविधीकरण, अनुपूरक कृषि, जैविक कृषि।

- मानव पूंजी का निर्माण- मानव पूँजी एक स्वोत के रूप में, मानव पूंजी एवं आर्थिक संवृद्धि, भारत में शिक्षा का विकास एवं उपलब्धियाँ।
- रोजगार- संवृद्धि, अनौपचारीकरण एवं अन्य मुद्दे।
- आधारिक संरचना- अर्थ एवं प्रकार, केस अध्ययन, ऊर्जा, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य आधारिक संरचना के सूचक एक मूल्यांकन।
- पर्यावरण- धारणीय विकास, संसाधनों की अल्प उपलब्धता, पर्यावरणीय ह्रास।

इकाई-IV : **भारत और इसके पड़ोसी देशों के तुलनात्मक विकास अनुभव** (12 पीरियड)

- भारत एवं पाकिस्तान
- भारत एवं चीन
- मुख्य बिन्दु- वृद्धि, जनसंख्या, क्षेत्रीय विकास एवं अन्य विकासात्मक निर्देशांक।

<u>अनुमोदित पुस्तकों के नाम–</u>

1. **अर्थशास्त्र में सांख्यिकी**– एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।
2. **भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास**– एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

उच्च माध्यमिक (+2 स्तरीय) कक्षा-11वीं की पाठ्यपुस्तकें

(हिन्दी संस्करण)

वाणिज्य की अनुमोदित पाठ्यपुस्तकें

1. **लेखाशास्त्र** :-
   (i) **लेखाशास्त्र** (वित्तीय लेखांकन, भाग-1) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) **लेखाशास्त्र** (वित्तीय लेखांकन, भाग-2) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
2. **व्यवसाय अध्ययन** (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)

कला की अनुमोदित पाठ्यपुस्तकें

1. **मनोविज्ञान** (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
2. **समाजशास्त्र** :-
   (i) समाज का बोध (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) समाजशास्त्र का परिचय (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
3. **इतिहास** :-
   (i) विश्व इतिहास के कुछ विषय (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
4. **राजनीतिशास्त्र** :-
   (i) भारत का संविधान और व्यवहार (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) राजनीतिक सिद्धांत (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
5. **भूगोल** :-
   (i) भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) भारत का भौतिक पर्यावरण (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) भूगोल में प्रयोगात्मक कार्य (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
9. **अर्थशास्त्र** :-
   (i) अर्थशास्त्र में सांख्यिकी (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
   (i) भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)

विज्ञान की अनुमोदित पाठ्यपुस्तकें

1. **जीव विज्ञान** (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
2. **रसायनशास्त्र** :-
   (i) **रसायनशास्त्र** (भाग-1) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) **रसायनशास्त्र** (भाग-2) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
3. **भौतिकी** :-
   (i) **भौतिकी** (भाग-1) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) **भौतिकी** (भाग-2) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)
6. **गणित** (भाग-1) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्सटबुक द्वारा मुद्रित)

नोटः- बी.टी.बी.सी. द्वारा मुद्रित उपरोक्त विषयों के अंग्रेजी संस्करण भी उपलब्ध हैं।

भाषा की अनुमोदित पाठ्यपुस्तकें

1. **हिन्दी :-**
   (i) दिगंत (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) हिन्दी भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) हिन्दी व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
2. **अंग्रेजी :-**
   (i) The Rainbow (Part - I) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) The story of English (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) English Grammar (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
3. **संस्कृत :-**
   (i) कौस्तुभः (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) संस्कृत भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) संस्कृत व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
3. **मैथिली :-**
   (i) तिलकोर (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) मैथिली भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) मैथिली व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
4. **भोजपुरी :-**
   (i) दुभीधान (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) भोजपुरी भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) भोजपुरी व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
5. **मगही :-**
   (i) पाटली (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) मगही भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) मगही व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
6. **बांग्ला :-**
   (i) शतभिषा (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
7. **उर्दू :-**
   (i) कहकँशां (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
8. **अरबी :-** अलहदी कतुल अरबिया (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
9. **फारसी :-** लालोगोहर (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

© प्रकाशक :

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति
(उच्च माध्यमिक प्रभाग)
बुद्ध मार्ग, पटना-800001

Sole Printer & Sole Distributor

KANAK PRAKASHAN®
'RAGHUVANSHAM', PATNA-800023

Sales Office :

SHOP NO. 15, GROUND FLOOR, JANPARA HOUSE,
KHAZANCHI ROAD, PATNA-800004